Q. Describe the Social, Economic and Political condition of France on the eve of Revolution ?

Ans:- विश्व इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना फ्रांसीसी क्रांति है, जिसने स्वतंत्रता, समानता तथा सामाजिक न्याय का अमर संदेश देकर एक युग की विदाई और दूसरे युग की आगमन की सूचना दी, जिससे समस्त यूरोप में हलचल मच गया व विश्व के जनजीवन पर भी बड़ा ही गहरा प्रभाव पड़ा। यह क्रांति भी अन्य क्रांतियों की तरह अकस्मात नहीं हुई बल्कि इसके तह में कई कारण छिपी हुई थी। जिसमें फ्रांस की तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दशा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक दशा :- फ्रांस की सामाजिक व्यवस्था संतोषजनक न थी। बिल्कुल सरसरी नजर से देखने पर भी अनेक बुराइयाँ, कुरीतियाँ और हानिकारक कुव्यवस्थाएँ स्पष्टरूपेण सामने आती है। फ्रांस का सामाजिक ढाँचा खुले तौर पर असमानता के आधार पर खड़ा था। वैसे तो समाज में दो वर्ग थे, एक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग तथा दूसरा विशेषाधिकार विहीन वर्ग, लेकिन यह भी यहीं तक सीमित न था। इन दोनों वर्गों में कई उपवर्ग थे। जिसमें आसमान - जमीन का अंतर था। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में पादरी और सामन्त आते थे, विशेषाधिकार विहीन वर्ग में किसान, मजदूर, छोटे-छोटे व्यवसायी और पूंजीपति लोग आते थे।

फ्रांस के समाज में धर्म की प्रधानता थी जिससे चर्च प्रमुख संस्था थी, और पादरी समाज में सर्वोच्च शिखर पर थी, फ्रांस की जनसंख्या 2 करोड़ पचास लाख में इनकी संख्या 1 लाख 30 हजार थी। ये लोग समाज के धनी और शक्तिशाली वर्ग थे, किन्तु इस वर्ग में भी सभी धनी न थे। यह दो उपवर्गों में बंटा था - बड़ा पादरी व छोटा पादरी। बड़े पादरी सबसे धनी व शक्तिशाली थे। इनकी संख्या और भी कम थी, ये लोग मठों के अधिपति थे और फ्रांस के जमीन के 1/5 भाग के मालिक थे तथा किसानों व निम्नवर्गों से अनेक तरह के कर वसूलते थे तथा शासन के उच्च पदों पर इन्हीं की नियुक्ति होती थी, पर बड़ी आश्चर्य की बात थी कि धनी होते हुए भी इनको करों से छुटकारा था तथा धार्मिक नेता होते हुए भी अध्यात्म से कोसों दूर थे और अपना सारा जीवन दाँव-पेंच, रंगरेलियाँ व मनोरंजन में बिताते थे।

इसके ठीक विपरीत छोटे पादरी थे वे भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग थे लेकिन इनकी दशा अत्यन्त दयनीय थी। वे ईमानदार तथा चर्च के सभी धार्मिक कार्यों को पूरा करते थे, इन्हें गिरजों

जैसा जीवन व्यतीत करना पड़ता था क्योंकि जहाँ बड़े पादरी को ढाई हजार पौंड वार्षिक वेतन मिलता था वहीं इन्हें 20 पौंड से ही संतोष करना पड़ता था। इतना ही नहीं इनके पुत्रों को भी बड़े पदों पर नियुक्त नहीं किया जाता था। इस पर विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के उपवर्गों में आसमान जमीन का अंतर था, जिससे छोटे पादरी बड़े पादरी से जलते थे और फ्रांस के समाज में तबादला चाहते थे।

विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में सामन्त लोग भी आते थे, इस वर्ग में भी उपवर्ग थे। एक दरबारी सामन्त और दूसरा प्रांतीय सामन्त। दरबारी सामन्त वर्साई भवन के राजदरबार में रहते थे और इन लोगों के पास भी फ्रांस की भूमि का $1/4$ भाग था। इनके जमीन का देखभाल इनके द्वारा नियुक्त व्यक्ति करते थे जो किसानों को चूसकर इनकी सुख-सुविधा के हरेक सामान देने के लिए तत्पर रहते थे। इनके पुत्रों का भी राजनीतिक विभाग में नियुक्ति होती थी और ये तरह-तरह के पेंशन पाते थे। ये भी वर्साई में रहकर कुचक्र, रंगरेलियाँ तथा ऐशोआराम से अपना जीवन व्यतीत करते थे।

प्रांतीय सामन्त प्रान्तों में रहते थे। इनके पास भी फ्रांस के जमीन का कुछ भाग था। तथा वे प्रांत में रहकर अपनी खेती करवाते थे लेकिन इनकी स्थिति दयनीय थी। इनके पुत्रों को सैनिक शिक्षा दी जाती थी पर बड़े पद नहीं दी जाती थी क्योंकि बड़े पद दरबारी सामंत के पुत्रों से ही भर जाते थे इसीलिए वे भी फ्रांस में परिवर्तन चाहते थे। जिससे उनको भी दरबारी सामन्त की तरह सुविधा मिले।

विशेषाधिकार विहीन वर्ग :– विशेषाधिकार विहीन वर्ग में मध्य वर्ग, शिल्पी व किसान आते थे। यही पुरातन व्यवस्था में सबसे तंग वर्ग था। फ्रांस की आबादी में इस वर्ग की संख्या प्रायः सैकड़े-पंचानवें थी। मध्यमवर्ग का आविर्भाव 13वीं शताब्दी में हुआ था। इस वर्ग में व्यवसायी, पूँजीपति तथा बुद्धिजीवी, वकील, डाक्टर, अध्यापक लोग आते थे। इनलोगों ने राजनीति, दर्शन व विज्ञान की पुस्तकें पढ़कर अपना दृष्टिकोण काफी व्यापक बना लिया था। ये लोग इतने धनी थे कि सरकार तथा कुलीनों को कर्ज दिया करते थे। फिर भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग इन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे। फलतः उनके हृदय में काफी आघात पहुँचता था। वे यह भी सोचते थे कि उनका व्यापार असीमित करों के कारण उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच रही थी। अतः वे क्रांति की कामना करते थे। जिससे उन्हें समानता तथा स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त हो सके।